KALA SOPAN MULTIDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL
(A Peer Reviewed Journal)
Volume 01, Issue 01, January 2024
©2024

पूर्वांचल के प्रखर सचेतक राहुल सांकृत्यायन और उनकी इतिहास दृष्टि

डा0 राजेश कुमार शर्मा

प्रोफेसर– इतिहास विभाग

राजकीय महाविद्यालय, रूधौली जनपद –बस्ती (उ0प्र0)

सारांश

इतिहास के भौतिकवादी दृष्टिकोण के प्रबल पक्षधर राहुल सांकृत्यायन एक इतिहासकार, दार्शनिक, विचारक, साहित्यकार, भाषाशास्त्री होने के साथ–साथ सुधारवादी जननेता भी थे। स्वाधीनता आन्दोलन के दौरान विशेषकर बिहार के किसान आन्दोलन में इनकी भूमिका और योगदान अत्यन्त उल्लेखनीय और सराहनीय रहा है। महापंडित राहुल सांस्कृत्यायन ने अपना ज्ञान बढ़ाने के लिए 30 भाषाओं में शिक्षा ली थी। उनके उपन्यास 'बोल्गा से गंगा तक' सभी भारतीय भाषा एवं अनेक विदेशी भाषा में अनुवादित है। वे कुछ समय के लिए आर्य समाज की गतिविधियों से भी जुड़ गए थे लेकिन जल्द ही वह इससे अलग हो गए थे क्योंकि आर्य समाज की समाज–सुधार की विचारधारा उनके स्वतंत्र चिंतन में बाधा लगती थी। वह तार्किक दर्शन की खोज करना चाहते थे, जिसमें समस्त मानव जीवन के हित को देखा जा सके और यही वजह है, कि उनकी दिलचस्पी बौद्ध धर्म में जागी। वस्तुतः बौद्ध धर्म पर उनके अनुसंधान भारतीय इतिहास में अहम है।

मुख्य शब्द : राहुल, इतिहास, बौद्ध धर्म, चेतना, मानव कल्याण, चिन्तन, भाषा, दार्शनिक आदि ।

प्रस्तावना –

राहुल जी का जन्म सन् 1893 ई0 में आजमगढ़ के एक रूढ़िवादी ब्राह्मण परिवार में हुआ था। इनके बहुआयामी व्यक्तित्व पर, निश्चित रूप से इस काल की राष्ट्रीय अन्तर्राष्ट्रीय घटनाओं एवं आर्थिक–सामाजिक परिस्थितियों का प्रभाव पड़ा होगा। इनके जीवन काल में ही भारत में हड़प्पा सभ्यता की खोज हुई थी, आर्यों की संस्कृति के स्वरूप पर बहस हो रहा था, 1857 की क्रान्ति के बाद देश में विभिन्न प्रकार के आंदोलन हो रहे थे, यूरोप में औद्योगिक क्रान्ति के बाद आर्थिक, सामाजिक क्षेत्र में परिवर्तन हो रहा था, विज्ञान के क्षेत्र में डार्विन ने जगत की उत्पत्ति और विकास की नयी व्याख्या प्रस्तुत कर दी थी और चार दशकों के भीतर इन्हीं के जीवन काल में दो–दो विश्व युद्ध हुए। भारत में अंग्रेजी शासन के औचित्य को सिद्ध करने वाले साम्राज्यवादी इतिहासकारों (जेम्स मिल, विंसेन्ट स्मिथ आदि) तथा अंग्रेजी शिक्षा पाये राष्ट्रीय विचारधारा वाले भारतीय इतिहासकारों के मध्य संवाद–प्रतिवाद की स्थिति बनी हुयी थी। इतिहास

के क्षेत्र में कार्ल मार्क्स ने ऐतिहासिक समाज के विकास में द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद एवं वर्ग–संघर्ष का सिद्धान्त प्रस्तुत किया था। राहुल जी ने इन सभी का अध्ययन व चिंतन किया। सभी विचारों को तर्क की कसौटी पर कसने के पश्चात उन्होंने मार्क्स के द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद को ही इतिहास को समझने की कुन्जी समझा। वे प्रथम भारतीय विद्वान थे जिन्होंने इतिहास को वस्तुनिष्ठ, भौतिकवादी एवं तार्किकता के आधार पर व्याख्यायित करने का प्रयत्न किया।

राहुल जी को प्रतिगामी रूढ़ियों एवं परम्पराओं को तोड़ने में कभी संकोच नहीं हुआ। इसका प्रारम्भ उनके विवाह के अवसर पर 11 वर्ष की आयु में उनके घर से ही हुआ, जब उन्होंने इसे तमाशा बताते हुए कहा – "ग्यारह वर्ष की अवस्था में मेरी जिन्दगी को बेचने का घर वालों को अधिकार नहीं।" राहुल जी ने पूर्वजों की हर उपलब्धियों को स्वीकार करते एवं सीमाओं को तोड़ते हुए उन्होंने ऐतिहासिक विकास की गति समझकर नयी चेतना प्राप्त की, और उसको अकेले जितना प्रसारित किया उतना किसी अन्य व्यक्ति ने नहीं।

गाँव की प्रारम्भिक शिक्षा के बाद भागकर बद्रीनाथ, केदारनाथ, वाराणसी से छपरा तक की यात्रा में अध्ययन, साधु एवं किसान नेता का अनुभव प्राप्त किया। घायल हुए, जेल गये फिर वहाँ से नेपाल, तिब्बत, श्री लंका होकर सोवियत गणराज्य तक राहुल जी की रोमांचकारी यात्रा भौगोलिक होने के साथ–साथ महान बौद्धिक सांस्कृतिक यात्रा भी है जो वैष्णव रूढ़िवाद, आर्य समाजी, सुधारवाद, बौद्ध मानवतावाद से गुजरते हुए वैज्ञानिक समाजवाद (मार्क्सवाद) तक पहुँचती है। इसलिए राहुल जी के व्यक्तित्व में उदात्त त्याग, तार्किकता, रूढ़िभंजकता, समता एवं मानवता के उत्थान के लिए समर्पण का भाव मिलता है।

अध्ययन का उद्देश्य : वर्तमान वैश्वीकृत और आधुनिक युग में शिक्षा के विकास और विज्ञान की प्रगति ने जनतांत्रिक मूल्यों को मजबूत ही बनाया है। इतिहास लेखन की सभी विधाओं का अध्ययन करने और उसे तर्क की कसौटी पर कसने के बाद राहुल जी ने इतिहास को वस्तुनिष्ठ, भौतिकवादी एवं तार्किकता के आधार पर व्याख्यायित करने का प्रयत्न किया। यह इनके इतिहास चेतना का सकारात्मक पक्ष था कि इन्होने अतीत से सहायता तो ली लेकिन इनकी दृष्टि में हम अतीत की ओर लौट तो सकते नहीं क्योंकि अतीत को वर्तमान बनाना प्रकृति ने हमारे हाथ नहीं दे रखा है।"[1] इस प्रकार यद्यपि उनका व्यक्तित्व बहुआयामी था, तथापि इस शोध–पत्र में हमने केवल उनकी ऐतिहासिक चेतना का ही विवेचन करने का प्रयास किया है।

शोध पद्धति – प्रस्तुत शोध–पत्र हेतु शोधकर्ता की पद्धति ऐतिहासिक, समालोचनात्मक तथा व्याख्यात्मक रही है। ज्ञात तथ्यों तथा इस विषय पर उपलब्ध पूर्ववर्ती लेखकों के विचारों और सरकारी दस्तावेज का विश्लेषण और आलोचनात्मक मूल्यांकन करते हुए प्राप्त परिणामों का सत्य की कसौटी पर परीक्षण करने का प्रयास किया गया है। शोध अध्ययन में सबसे महत्वपूर्ण वस्तु प्रस्तुत अध्ययन की विषय और सामग्री की होती है। इस विषय पर यद्यपि प्राथमिक स्रोत के रूप में विभिन्न रिपोर्ट तथा इतिहासकारों की विभिन्न रचनाओं में पर्याप्त मात्रा में सामग्री मौजूद नही दिखती है लेकिन फिर भी जो भी सामग्री उपलब्ध है, जिसका प्रयोग इस शोधपत्र में किया गया है। इसके अतिरिक्त पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित विभिन्न सम्पादकों के विचारों को विश्लेषण करते हुए सामग्री एकत्र कर उसका प्रयोग द्वितीयक स्रोत के रूप में किया गया है।

राहुल सांकृत्यायन की इतिहास चेतना –

राहुलजी की इतिहास चेतना व्यापक अध्ययन, भ्रमण एवं अनुभव से निर्मित हुयी थी। इन्होंने इतिहास को पृथ्वी के विकास के साथ प्रारम्भ किया तथा मानव के इतिहास को पुरातात्विक अवशेषों की प्राप्ति के साथ सीमित न करते हुए एक कोशिकीय जीवों से उसकी विकास यात्रा को देखा। किसी समय घोर ईश्वरवादी रहे राहुल ने जब ईश्वर के अस्तित्व का खण्डन किया तब इनके इतिहास चेतना की पूर्णता दिखाई पड़ता है। इन्होंने मानव के प्रत्येक स्थिति का जिम्मेदार मानव को मानते हुए ऐतिहासिक भौतिकवाद एवं द्वन्द्वात्मक संघर्ष से समाज के विकास के मार्क्स के मत को समर्थन दिया। इतिहास उनके लिए केवल खुदाई, अनुसंधान एवं अध्ययन मनन का विषय नहीं, बल्कि विकास और इससे आगे पुनर्निर्माण का भी विषय है। इनकी दृष्टि में जो इतिहास को विकसित नहीं करता, उसे इतिहास अपने में लपेट कर पीछे ले जाता है। वह इतिहास को वर्तमान के धरातल पर खड़े होकर देखते हैं और उसके अनुभवों को लेकर भविष्य की

बात करते हैं। यही कारण है कि इतिहास उन पर हावी नहीं, वह इतिहास पर हावी हैं। उन्होंने हड़प्पा, मोहनजोदड़ों, तक्षशिला, श्रावस्ती, कोसल, वैशाली, नालंदा, विक्रमशिला तथा अन्य बहुत से पुरास्थलों के पुरावशेषों एवं खंडहरों की इंटों, टीलों, सिक्कों आदि का अध्ययन यही समझने के लिए किया कि भारतीय इतिहास के विकास की गति और गतिरोध का रहस्य क्या है।

राहुल जी की ऐतिहासिक रचनाओं जैसे पुरातत्त्व निबन्धावली(1936), बौद्धदर्शन(1942), मध्यएशिया का इतिहास भाग– एक एवं दो(1951–52), भारत में अंग्रेजी राज के संस्थापक (1955 में अनुवाद), ऋग्वैदिक आर्य(1956) अकबर(1956) इत्यादि के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि उनमें एक उच्च कोटि के इतिहासकार के सभी गुण विद्यमान थे। उनका पूरा लेखन प्रत्यक्ष अनुभवों एवं इतिहास–पुरातत्त्व के प्रमाणों से पुष्ट है। उनकी दृष्टि में इतिहास की कसौटी परम्परा नहीं, पुरातत्त्व है। जिस ऐतिहासिक बात को पुरातत्त्व का समर्थन प्राप्त नहीं है उसकी नींव बालू पर है। उनके अनुसार पूर्वाग्रह – दुराग्रह तथा ऐतिहासिक अनुसंधान साथ–साथ नहीं चल सकते। हमें वही निष्कर्ष निकालने चाहिये जो तथ्यों पर आधारित हों। इतिहास ऐसा विषय है, जिसमें कि अधिकांशतः निष्कर्ष को सत्य के समीपतम होने का ही दावा किया जा सकता है। वही सत्य हो सकता है जिसके लिए पुरातत्त्व, पुरालिपि, मुद्रा या तुलनात्मक भाषा तत्त्व स्पष्ट समर्थन प्रदान करते हों। राहुल जी की इतिहास चेतना में, इतिहास का सबसे महत्त्वपूर्ण उपयोग मानवता के कल्याण में है। इन्होंने अतीत के प्रति आग्रह से होने वाले नुकसान की ओर संकेत करते हुए कहा कि इतिहास हमारे समाज की पुरानी बेड़ियों को मजबूत करता है। अतीत के प्रति आग्रह हमारी मानसिक स्वतंत्रता का सबसे बड़ा शत्रु है। जिस जाति की सभ्यता जितनी पुरानी होती है उसकी मानसिक दासता के बंधन उतने ही अधिक होते हैं। भारत की सभ्यता निश्चित रूप से पुरानी है इसलिए इसके आगे बढ़ने के रास्ते में रूकावटें भी अधिक हैं। मानसिक दासता प्रगति में सबसे अधिक बाधक होती हैं। हमारे कष्ट हमारी आर्थिक–राजनैतिक सामाजिक समस्यायें इतनी अधिक और इतनी जटिल हैं कि हम तब तक उनका कोई हल नहीं सोच सकते जब तक कि हम साफ–साफ और स्वतंत्रतापूर्वक इन पर सोचने का प्रयत्न न करें। उनका मानना है कि हमें अपने अतीत के महिमा मण्डन में अपनी उर्जा खर्च न करके भविष्य के निर्माण में खर्च करनी चाहिये।

रूढिवादिता का प्रखर विरोध –

राहुल जी ने मानवता के उत्थान में बाधक सभी धार्मिक एवं दार्शनिक सीमाओं पर कड़ा प्रहार किया। उनका मानना था कि धर्म परिवर्तन की गति को नहीं मानता और अगर वह मानता भी है तो चक्रीय ढंग से (द्वापर – त्रेता – कलियुग – सतयुग)। इसमें विकास और प्रगति करने की गुंजाइश नहीं है। दर्शन को धर्म की तुलना में उन्होंने उदार बताया। उन्होंने कहा आज का यह वैज्ञानिक युग प्रेरित करता है कि हम स्वप्नजगत को छोड़े और स्वाभाविक जगत में आये। यह संसार जो प्रतिक्षण परिवर्तित हो रहा है, और परिवर्तन भी ऐसा कि इसका अतीत हमेशा अतीत ही रहेगा, वर्तमान रूप नहीं धारण कर सकेगा, ऐसी स्थिति होने पर स्थिरतावादी धर्म हमारे लिए कभी सहायक नहीं हो सकते। जगत की गति के साथ हमें भी सरपट दौड़ना चाहिये किन्तु धर्म हमें खींचकर पीछे रखना चाहते हैं। क्या हमारे पिछड़ेपन से संसार–चक्र हमारी प्रतीक्षा के लिए खड़ा हो जायेगा?

राहुल जी ने समाज के विभिन्न पक्षों को देखा–परखा ही नहीं, समाज के विकासक्रम और इसके बदलते स्वरूप का भी व्यापक अध्ययन किया, विशेषकर भारतीय समाज का। इसके लिए उन्होंने इतिहास पुरातत्त्व का गंभीर अध्ययन किया, कई भाषाओं का ज्ञान अर्जित किया। 'महापंडित' की उपाधि उन्हें काशी की महासभा ने दी थी। वेदों के अध्ययन के आधार पर राहुल ने अपने ग्रन्थ 'ऋग्वैदिक आर्य' में वैदिक समाज का ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन प्रस्तुत किया। इन्होंने लिखा कि ऋग्वेद के जिज्ञासुओं को अपनी कल्पना की सीमाओं को जान लेना आवश्यक है। ऋग्वेद हमारे देश के ताम्र–युग की देन है। उस समय ताम्र–युग अपने अंत की ओर था जब सप्त सिंधु (पंजाब) के ऋषियों ने ऋचाओं की रचना की और जब सुदास ने 'दाशराज्ञ युद्ध' में विजय प्राप्त करके आर्यों के जन व्यवस्था की जगह एकताबद्ध सामंती व्यवस्था कायम करने का प्रयत्न किया। सप्तसिंधु के आर्यों की संस्कृति प्रधानतः पशुपालकों की संस्कृति थी। आर्य खेती जानते थे और जौ की खेती भी करते थे। पर, इसे इनकी जीविका का मूल नहीं, बल्कि गौण साधन ही कहा जा सकता है। वह अपने गौ, अश्वों, भेड़–बकरी को अपना परम धन समझते थे और ये ही उनके खान–पान, पोशाक एवं देवताओं को संतुष्ट करने के सबसे बड़े साधन थे। पशुधन को परम–धन मानने

के कारण ही आर्यों को नगरों की आवश्यकता नहीं थी। इस प्रकार ऋग्वैदिक आर्यों की संस्कृति पशुपालनों एवं ग्रामों की संस्कृति थी। इन सीमाओं को ध्यान में रखना चाहिये।

भारतीय धर्म व दर्शन और राहुल जी –

राहुल जी के अनुसार ऋग्वैदिक आर्यों का सम्बन्ध ईरानियों, शकों, ग्रीक, र्जमन, फ्रेंच, मेसोपाटयमिया आदि से कम से कम भाषायी तौर पर तो था ही। आर्यों के समानान्तर सप्त सिंधु प्रदेश में एक नगरीय सभ्यता भी विद्यमान थी साथ ही इनका सम्बन्ध और संघर्ष दास–दस्युओं से भी था। हिमालय की खश व किरात जातियों में ऋग्वैदिक देवता आज भी पूजे जाते हैं। वैदिक समाज के स्वरूप के बारे में इन्होंने लिखा– उस समय वर्ण–व्यवस्था कर्म पर निर्भर थी, ब्राह्मण, क्षत्रिय हो सकता था और क्षत्रिय, ब्राह्मण। ऋग्वेद के प्राचीन मंत्रों में किसी एक देवता को सर्वोपरि मानने का ख्याल नहीं था। किन्तु बाद में मंत्रों (दशम् मण्डल) में बहुदेववाद के एकेश्वर वाद की ओर प्रगति दिखाई पड़ती है। सभी जातियों के देव लोक में उनके अपने समाज का प्रतिबिम्ब होता था। भौतिक परिवर्तनों के कारण समाज के बदलने के साथ–साथ दार्शनिक–धार्मिक मान्यताएं भी बदलती हैं। ऋग्वेद का 'ब्रह्मा' एक साधारण देवता हैं किन्तु उपनिषदों में 'ब्रह्म' एक अद्वितीय निराकार शक्ति बन जाता है। ऋग्वेद में 'आत्मा' शब्द प्राणवायु या शरीर के लिए प्रयुक्त हुआ है। वैदिक काल के ऋषि पुनर्जन्म से परिचित नहीं थे। शायद उनकी सामाजिक विषमताओं के इतने जबरदस्त समालोचक पैदा नहीं हुए थे जो कहते कि दुनिया की यह विषमता, अमीरी–गरीबी, दासता– स्वामिता, जिससे चंद को छोड़कर बाकी सभी दुःख की चक्की में पिस रहे हैं, सख्त सामाजिक अन्याय है और समाधन कभी न दिखाई देने वाले परलोक से नहीं किया जा सकता। जब इस तरह के समालोचक पैदा हो गये तब उपनिषद काल के धार्मिक नेताओं को पुनर्जन्म की कल्पना करनी पड़ी। पुनर्जन्म के माध्यम से इस विषमता का समाधान विषमता के द्वारा किया जाना बड़े ही चतुर दिमाग का आविष्कार था। वैदिक कर्मकाण्ड के विरोधी, बुद्धि–विवेक के पक्षधर, दुःख के कारण व उपाय ढूंढने वाले बुद्ध ने उनका ध्यान खींचा, वह बौद्ध हो गये किन्तु शीघ्र ही बौद्ध धर्म की सीमाएं उनको समझ में आयी और मोह भंग हो गया ।

बुद्धकालीन सामाजिक–धार्मिक क्रान्ति के सम्बन्ध में राहुल जी ने कहा कि बुद्ध ने दुःख और उसकी जड़ को समाज में न ढूंढकर, व्यक्ति में देखने की कोशिश की। भोग की तृष्णा के लिए राजाओं, क्षत्रियों, ब्राह्मणों, वैश्यों सारी दुनिया को झगड़ते, मरते–मारते देख उस तृष्णा को व्यक्ति से हटाने की कोशिश की। मानों काटों से बचने के लिए सारी पृथ्वी को ढकने के बजाय अपने पैरों को चमड़े से ढका जा सकता है। दूसरी बात यह कि सामाजिक ढांचे को बदलना उनका उद्देश्य भी नहीं था। बात यह है कि जो अपनी इच्छाओं और जरूरतों का दमन कर देगा, वह समाज को बदलने की जरूरत क्यों महसूस करेगा? इसी कारण बुद्ध के दर्शन में भी औरों की तरह यह त्रुटि आ गयी कि उसे समाज पर लागू करने की कोशिश नहीं की गयी। इस तरह राहुल जी ने महसूस किया कि 'दुःख सत्य' के साक्षात्कार से दुःख हेतुओं को संसार में दूर करने का जो सवाल था, वह तो खत्म हो गया। बुद्ध ने औरों से आगे बढ़कर दुःख के कारण और निवारण के उपाय को स्वीकार किया था लेकिन व्यवहार में उसे छोड़कर (बल्कि दुःख से पीड़ित लोगों को ही अपने अभियान के दायरे से निकालकर) दुःख दूर करने में अपनी असमर्थता स्वीकार कर लिया। बुद्ध ने क्षणिकवाद को समाज की आर्थिक व्यवस्था पर लागू नहीं करना चाहा। इससे स्पष्ट है कि राहुल जी की इतिहास चेतना बुद्ध की विचार–धारा छोड़कर आगे क्यों बढ़ी। राहुल जी मूलतः शोषक परजीवी वर्गों के खिलाफ संघर्ष के और उनसे शोषितों पीड़ितों की मुक्ति के तरफदार हो गये। इसलिए वह मेहनतकश जनता के मुक्तिमार्ग और उस पर चलने के लिए मुक्ति के दर्शन की खोज कर रहे थे ।

आध्यात्मिक चेतना और धर्म प्रभावित दर्शन से मुक्त होकर राहुल जी आर्य समाज की ओर आकृष्ट हुए, क्योंकि स्वामी दयानंद सरस्वती सामाजिक रूढ़ियों और कुरीतियों को तोड़ने और मिटाने का अभियान चला रहे थे। लेकिन उनकी सबसे बड़ी सीमा यह थी कि वह वैदिक मान्यता के आधार पर वैसा कर रहे थे। वैदिक समाज में जात–पात नहीं थी, भेद–भाव नहीं था, यह तो ठीक है लेकिन जात–पात, भेद–भाव मिटाने के लिए, वैदिक समाज में लौटकर जाना सम्भव नहीं। यही कारण है कि राहुल जी यहाँ से भी आगे बढ़ गये। वास्तव में जिस नयी चेतना का प्रसार राहुल जी ने किया, वह मानव–समाज के इतिहास में एक नये युग का प्रवर्तन करती है। उनका मत है कि आधुनिक मनुष्य की चेतना विज्ञान, जनतंत्र एवं

मानवीय पुरुषार्थ से नियंत्रित और उन्हीं की आवश्यकताओं से विकसित होती है। इस युग में पहली बार मनुष्य सबके ऊपर तब प्रतिष्ठित हुआ जब समाजवाद का निर्माण शुरू हुआ। राहुल जी ने भारत में मनुष्य की चेतना को प्राचीनता और मध्यकालीनता से मुक्त कर आधुनिक बनाने का अथक प्रयास किया। वैज्ञानिक चेतना की विशेषता है– कार्य–कारण श्रृंखला में सोचना। इन्होंने सामाजिक प्रसंग में कहा– संसार में बिना कारण कोई कार्य (बात) नहीं हुआ करता। पूँजीवाद भी तब उत्पन्न हुआ जब उसके उत्पन्न करने वाले कारण पैदा हो गये थे। इसी तरह साम्यवाद (वैज्ञानिक–साम्यवाद) तब पैदा हुआ जब उसे प्रगट करने वाले कारण मौजूद हुए।

आज का नवशिक्षित भारतीय भी, वेद व उपनिषद के ऋषियों को ही अनंतकाल के लिए दार्शनिक तत्वों को सोचकर पहले से रख देने वाला समझता है। जबकि आज का यूरोपीय विद्वान प्लेटो और अरस्तू को दर्शन की प्रथम व महत्त्वपूर्ण ईंट रखने वाला समझता है। हमें भी अपने समय के अनुसार सोचना–विचारना है और प्राचीन ऋषियों, दार्शनिकों, विद्वानों आदि को अपनी चिंतन परम्परा में महत्त्वपूर्ण सोपान समझना है न कि अंतिम सोपान समझ कर विकास की गति को अवरूद्ध करना है।

राष्ट्र के प्रति राहुल जी का दृष्टिकोण –

राहुल जी का इतिहास चिंतन सकारात्मक था। उन्हें विश्वास था कि प्रतिगामी शक्तियों के प्रयासों के बावजूद समाज आगे बढ़कर रहेगा और ये चाहते थे कि भारतीय समाज की प्रगति तेजी से हो। आर्थिक शक्तियाँ पुराणपंथी समाज के अंडे को फोड़कर बाहर निकल चुकी हैं। वे सहस्राब्दियों के रुके विकास को फिर से चालित कर रही हैं। तेजी से आगे बढ़ने के लिए जनता का शिक्षित होना आर्थिक ढॉचे का समाजवादी होना आवश्यक है।" राष्ट्र को सुदृढ़ और जनता के जीवन को सुखी बनाने के लिए हमें बड़े कदम, बड़ी तेजी के साथ उठाने होंगे। यह तब सम्भव है जब कृषि में वैज्ञानिक पद्धति अपनायी जाये, भूमि की प्राकृतिक सम्पदा का समुचित उपयोग किया जाय, कल–कारखानों का विस्तार हो।

आज के समय में राहुल जी की इतिहास चेतना को आत्मसात करना एक नये क्रान्तिकारी बौद्धिक सांस्कृतिक आंदोलन के सूत्रपात की आधारभूत शर्त हैं। राहुलजी इतिहास के एक ऐसे संक्रमण काल के साक्षी थे, जब राष्ट्रीय आंदोलन के मुख्य धारा की सीमाएँ क्रमशः ज्यादा से ज्यादा स्पष्ट होती जा रही थी। इस प्रक्रिया को राहुल जी ने समझा और राष्ट्रीय जागरण से भी आगे बढ़कर उन्होंने मेहनतकश अवाम की अगुवाई में एक नये सामाजिक सांस्कृतिक परिवर्तन का स्वप्न देखा तथा सर्वथा नये संदर्भो में एक नये जनवादी एवं आलोचनात्मक विवेक की पुनर्प्रतिष्ठा की।

राहुल जी की इन्हीं ऐतिहासिक अवदानों के लिए डॉ0 काशी प्रसाद जायसवाल ने 1937 ई0 में लिखा था 'राहुल एक बुद्ध पुत्र ही नहीं, प्रमुखतः एक भारत पुत्र हैं।.....जनता के आदमी हैं, एक मायने में गॉधी से भी बड़े। उनका व्यक्तित्व बुद्ध से मिलता जुलता, जीव मात्र के प्रति दुर्बलता से मुक्त हैं। उनका दृष्टिकोण विश्वव्यापी, सुस्थिर एवं शांत हैं।"

निष्कर्ष –

राहुल जी की इतिहास चेतना का स्वरूप ऐसा है कि उन्हें इतिहास पुरुष कहा जा सकता है। नेक पीढ़ियों के ज्ञान, आशा–आकांक्षा आदि का जो सार वर्तमान में हमें मिला है, आगे ले चलने के लिए वही वास्तव में इतिहास–पुरूष है। इनकी इतिहास चेतना हमारे समस्त इतिहास एवं ऐतिहासिक ज्ञान का ऐसा तत्व है, जो हमें भविष्य की दिशा दिखा रहा है। उन्होंने अपनी कृतियों द्वारा मानवीय, करुणा, समता और अधिकारों की लोकतांत्रिक व्यवस्था को विश्व पटल पर अभिव्यक्त किया। एक व्यक्ति कितने आयामों वाला हो सकता है इसे समझने के लिए हमें राहुल सांकृत्यायन के पास जाना पड़ेगा। एक सचमुच का क्रान्तिकारी व्यक्तित्व जिसने अपने जीवन में ही असंभव को संभव कर दिखाया। आत्मशक्ति व्यक्ति के विकास की कितनी अनन्त सम्भावनाएं खोल सकती है राहुल इसके अनन्य प्रमाण थे। वस्तुगत स्थितियां शायद ही कभी उनके अनुकूल रही हों पर आत्मगत शक्ति की मानो उनके हाथ में लगाम हो– जिधर चाहा मोड़ दिया। आज का समय सारी दुनिया में संक्रमण का है। सारे पुराने मूल्य–मान्यताएँ–संस्थाएँ प्रश्नों के घेरे में हैं और नई राहें प्रशस्त नहीं हो पा रही हैं। भारत में नवजागरण की बात की जा रही है लेकिन इस नवजागरण के लिए प्रेरणा का स्रोत कहाँ है?

राहुल की सबसे बड़ी प्रासंगिकता यह है कि उनके ग्रंथों की, उनके कार्यों की, आज भी उतनी जरूरत है। जब तक 'जोकों का राज्य' समाप्त नहीं होता, जब तक दुनिया को बदलने की जरूरत बाकी है तब तक एक दिशा संकेत और समर्पित जिजीविषा की प्रेरणा के रूप में राहुल जिन्दा रहेंगे। उनके जीवन का सूत्र वाक्य था– ' भागो नहीं दुनिया को बदलो।' आज इस एक वाक्य की अत्यन्त प्रासंगिकता दिखती है।

सन्दर्भ

1. राहुल सांकृत्यायन सेलेक्ट एजेस ऑफ राहुल सांकृत्यायन, पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस, पृ० 16
2. राहुल सांकृत्यायन, मेरी जीवन यात्रा भाग–1, राधाकृष्ण प्रकाशन, पृ० 32–33
3. प्रभाकर मैकवे, पुरातत्त्व निबंधावली, साहित्य एकेडमी प्रकाशन, पृ० 227–28, 231,
4. ब्रजेश कु0 श्रीवास्तव, राहुल सांकृत्यायनः एक इतिहासपरक अनुशीलन, किताब महल प्रकाशन, पृ0 288–92
5. राहुल सांकृत्यायन, दर्शन–दिग्दर्शन, किताब महल प्रकाशन, पृ0 05, 364, 388, 511, 542
6. राहुल सांकृत्यायन, ऋग्वैदिक आर्य, साहित्य एकेडमी प्रकाशन, पृ0 1–3, 34
7. अलाका अत्रेय चुडाल, ए फ्रीथिंकिंग कल्चरल नेशनलिस्ट, आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटि प्रेस, पृ0 240–46
8. जानकी पाण्डेय, राहुल सांकृत्यायन घुम्मकडशास्त्र और यात्रावृत, जनाना भारती पब्लिकेशन, पृ० 31, 112
9. राहुल सांकृत्यायन, मानव समाज, किताब महल प्रकाशन, पृ० 221
10. राहुल सांकृत्यायन, फ्राम वोल्गा टू गंगा, लेफ्टवर्ड बुक्स पब्लिकेशन, पृ0 42–48
11. द्रष्टव्य, राहुल का लेख, 'इतिहास – पुराण', विविध प्रसंग, संकलन (नयी दिल्ली, 1988) पृ० 33–35